जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 08 नवंबर 201

भारत के पड़ोसियों के इतिहास को दर्शाने वाले 'फेस्टिवल ऑफ़ फिल्म्स' का जामिया में आयोजन

भारत के पड़ोसी देशों के इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाने वाली चार डॉक्यूमेंट्री को जामिया मिल्लिया इस्लामिया की एमएमएजे-एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (एआईएस), की सब्जेक्ट एसोसिएशन द्वारा, दो दिवसीय 'फेस्टिवल ऑफ फिल्म्स ऑफ साउथ एशिया' में दिखाया गया । इसका आयोेजन फिल्म साउथ एशिया से मिलकर किया गया।

प्रदर्शित की गई डॉक्यूमेंट्री में बांग्लादेश के तारेके और कैथरीन मसूद की 'मुक्तिगान 1995', जूड रत्नम की 'डेमन्स इन पैराडाइज' (श्रीलंका, 2017), नेपाल के केसंग सेटेन की 'ट्रेम्बलिंग माउंटेन' और मियां अदनान अहमद की जर्नी विदइन (पाकिस्तान, 2015) शामिल हैं।

फिल्मों में भारत के पड़ोसियों के इतिहास में - बांग्लादेश में 1971 का मुक्ति संग्राम, श्रीलंका में गृह युद्ध और लिट्टे एवं अन्य तमिल संगठनों की भूमिका, नेपाल में 2015 में आए भूकंप और पूर्वी और पश्चिमी संगीत की विरासत को आगे बढ़ाने से पहचान बनाने वाले पाकिस्तान के कोक स्टूडियो पाकिस्तान के बारे में बताया गया है।

इन फिल्मों की शैली में बहुत अलग थीं। फिल्मकारों ने अपने विषयों को बखूबी दर्शाया कि कैसे उनके समाज में ऐसी बड़ी हिंसक घटनाओं से वहां के लोगों के जीवन पर प्रतिकूल और नुकसानदायक प्रभाव पड़ा। इनमें नकारात्मक संघर्षों से सबक लेते हुए वर्तमान और भविष्य को बेहतर बनाने के लिए के लिए प्रेरित किया गया है।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सब्जेक्ट एसोसिएशन के सदस्य ऋषभ यादव और निलज़वांगमो ने की और

फ़िल्मों का परिचय अकेडमी के एम के छात्रों भुवननानिया, इरम अकबर, बिलाल अहमद तांत्रे, गौरी बिल्थरिया और राकेश रोशन ने कराया।

स्क्रीनिंग के बाद उन पर सारगर्भित चर्चाएं हुईं, जिनमें प्रो शोहिनी घोष, प्रो अजय बेहरा, डॉ सबिहा आलम और प्रो रश्मि दोरीस्वामी हिस्सा लिया। इन्होंने इन फिल्मों को उनके राजनीतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में रखा। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ जिसमें छात्रों और फैकल्टी सदस्यों ने हिस्सा लिया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक